ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 1-7

# साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता के स्वर

रोशनी देवी

हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

**Received:** 01/08/2026

**Revised:** 15/09/2026

**Published:**02/10/2026

**E-Mail**
**roshanisinghsr@gmail.com**

**DOI**
[XXXXXXXXXXXXXXXX]

**Copyright**
© The Authors. This article is published by Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika.

**How to Cite:**

Devi, R. (2026). साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता के स्वर. Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika, 1(1), 1-7.

रोशनी देवी (2026). साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता के स्वर. भारतीय नव शोध अध्ययन पत्रिका, खंड 1, अंक 1, अक्टूबर–दिसंबर 2026, पृ. 1-7

**सारांश/ Abstract**

हिंदी साहित्य में स्त्री की उपस्थिति आरंभ से ही रही है, किंतु लंबे समय तक स्त्री को साहित्य में मुख्यतः पुरुष दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता रहा। आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री स्वयं अपने अनुभवों, संघर्षों, आकांक्षाओं और अधिकारों को अभिव्यक्त करने लगी। यही चेतना आगे चलकर स्त्री-अस्मिता के रूप में विकसित हुई। स्त्री-अस्मिता का अर्थ केवल स्त्री की स्वतंत्रता या पुरुष के समान अधिकार की माँग नहीं है, बल्कि अपने अस्तित्व, व्यक्तित्व, निर्णय और पहचान को स्वयं स्वीकार करने तथा समाज से उसकी मान्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया भी है।

हिंदी की विभिन्न साहित्यिक विधाओं-कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, नाटक तथा संस्मरण-में स्त्री-अस्मिता के विविध स्वर दिखाई देते हैं। महादेवी वर्मा की रचनाओं में स्त्री की संवेदनशीलता और आत्मचेतना, मन्नू भंडारी की कहानियों में पारिवारिक संबंधों के भीतर स्त्री की पहचान, कृष्णा सोबती के साहित्य में स्त्री की स्वायत्तता, मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में ग्रामीण स्त्री का संघर्ष तथा दलित स्त्री लेखन में सामाजिक और जातिगत शोषण के विरुद्ध आवाज प्रमुख रूप से सामने आती है। इस प्रकार साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता का स्वर एकांगी न होकर बहुआयामी है।

**मुख्य शब्द: स्त्री-अस्मिता, स्त्री-विमर्श, हिंदी साहित्य, महिला लेखन, आत्मचेतना, स्वतंत्रता, पहचान**

ISSN:
[xxxxxxxxxx]

Bharatiya Nav Shodh Adhyayan Patrika
Volume 1, Issue 1 | October- December 2026 | Pages 1-7

## 1. प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ-साथ समाज में परिवर्तन की चेतना उत्पन्न करने वाला माध्यम भी है। समाज में स्त्री की स्थिति में होने वाले परिवर्तन साहित्य में भी दिखाई देते हैं। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में लंबे समय तक स्त्री की भूमिका को मुख्यतः परिवार, विवाह, मातृत्व और घरेलू दायित्वों तक सीमित किया गया। उसके व्यक्तिगत सपनों, इच्छाओं और स्वतंत्र निर्णयों को अपेक्षित महत्त्व नहीं मिला।

आधुनिक शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों और बदलती सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव से स्त्री ने अपने अस्तित्व के प्रति नई चेतना विकसित की। साहित्य में भी वह केवल किसी पुरुष पात्र की पत्नी, माँ, बहन या प्रेमिका के रूप में उपस्थित न रहकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ सामने आने लगी।

यहीं से स्त्री-अस्मिता का प्रश्न महत्त्वपूर्ण होता है। स्त्री पूछती है-उसकी पहचान क्या है? क्या उसकी पहचान केवल उसके पारिवारिक संबंधों से निर्धारित होगी? क्या उसे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का अधिकार है? क्या आर्थिक स्वतंत्रता के बिना सामाजिक स्वतंत्रता संभव है? क्या विवाह स्त्री के व्यक्तित्व की अंतिम सीमा है? साहित्य इन प्रश्नों को अनेक रूपों में सामने लाता है।

## 2. स्त्री-अस्मिता : अर्थ और अवधारणा

'अस्मिता' का सामान्य अर्थ है-अपनी पहचान, अस्तित्व और विशिष्ट व्यक्तित्व का बोध। इसलिए स्त्री-अस्मिता से आशय स्त्री के उस आत्मबोध से है जिसके माध्यम से वह स्वयं को स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में पहचानती है।

स्त्री-अस्मिता के प्रमुख आधार हैं-अपने अस्तित्व की पहचान, शिक्षा का अधिकार, आर्थिक आत्मनिर्भरता, अपने जीवन के निर्णय लेने की स्वतंत्रता, सामाजिक एवं पारिवारिक सम्मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समान अवसर तथा रूढ़ियों और भेदभाव के विरुद्ध प्रश्न उठाने की क्षमता।

इस दृष्टि से स्त्री-अस्मिता केवल पुरुष-विरोध नहीं है। यह स्त्री को मनुष्य के रूप में देखने और उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्वीकार करने की माँग है।

## 3. कविता में स्त्री-अस्मिता

कविता में स्त्री-अस्मिता का स्वर अत्यंत संवेदनशील रूप में दिखाई देता है। हिंदी कविता में महादेवी वर्मा का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं में स्त्री के अंतर्मन, संवेदना और आत्मिक स्वतंत्रता का स्वर दिखाई देता है। महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य में भी स्त्री-जीवन की समस्याओं पर गंभीर विचार मिलता है। 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में उन्होंने स्त्री की सामाजिक स्थिति, पराधीनता और अधिकारों पर विचार किया है। उनके यहाँ स्त्री केवल करुणा की पात्र नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र सत्ता रखने वाली मनुष्य है।

आधुनिक कविता में स्त्री की आवाज और अधिक मुखर हुई। कवयित्रियों ने प्रेम, शरीर, परिवार, मातृत्व, अकेलेपन और सामाजिक अपेक्षाओं को अपनी दृष्टि से व्यक्त किया। इस प्रकार कविता में स्त्री स्वयं को 'किसी की दृष्टि से देखी गई स्त्री के स्थान पर 'स्वयं बोलने वाली स्त्री' के रूप में प्रस्तुत करती है।

### 3. कहानी में स्त्री-अस्मिता

कहानी विधा में स्त्री-अस्मिता का स्वर विशेष रूप से प्रभावशाली है। कहानीकारों ने घरेलू जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से स्त्री के बड़े सामाजिक प्रश्नों को सामने रखा।

मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' में संबंधों और स्त्री के भावनात्मक निर्णयों को जटिल रूप में प्रस्तुत किया गया है। कहानी की नायिका के सामने प्रेम और जीवन से जुड़े निर्णय हैं। वह केवल सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार निर्णय लेने वाली पात्र नहीं, बल्कि अपनी भावनाओं और अनुभवों के आधार पर निर्णय करती है।

इसी प्रकार कृष्णा सोबती की रचनाओं में स्त्री की स्वतंत्र इच्छा और व्यक्तित्व का स्वर मुखर दिखाई देता है। उनका उपन्यास 'मित्रो मरजानी' की मित्रो अपने स्पष्ट व्यक्तित्व, बेबाक संवाद और सामाजिक वर्जनाओं पर प्रश्न उठाने के कारण हिंदी साहित्य के यादगार स्त्री-पात्रों में गिनी जाती है। यहाँ स्त्री की अस्मिता उसके मौन रहने में नहीं, बल्कि अपनी बात कहने के साहस में दिखाई देती है।

### 4. उपन्यास में स्त्री-अस्मिता

- उपन्यास स्त्री-जीवन को व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखने की सुविधा देता है। हिंदी उपन्यासों में स्त्री-अस्मिता से जुड़े प्रश्नों का विस्तृत चित्रण मिलता है।
- मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' में पारिवारिक विघटन के बीच स्त्री और बच्चे दोनों की स्थिति सामने आती है। शकुन का चरित्र यह प्रश्न उठाता है कि विवाह समाप्त होने के बाद स्त्री का अपना स्वतंत्र जीवन किस प्रकार निर्मित होता है।
- कृष्णा सोबती का 'मित्रो मरजानी' स्त्री की इच्छाओं और सामाजिक वर्जनाओं को लेकर महत्त्वपूर्ण रचना है। मित्रो पारंपरिक स्त्री-छवि को चुनौती देती है और अपने व्यक्तित्व को दबाने से इनकार करती है।
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण और अंचलीय समाज की स्त्रियों का जीवन विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। 'इदन्नमम' , 'चाक' और 'अल्मा कबूतरी' जैसी रचनाओं में स्त्री का संघर्ष केवल परिवार तक सीमित नहीं, बल्कि जाति, वर्ग, ग्रामीण सत्ता-संरचना और सामाजिक रूढ़ियों से भी जुड़ता है।

- उदाहरण के लिए 'चाक' में स्त्री-जीवन की जटिलताओं और ग्रामीण सामाजिक संरचना के बीच स्त्री की इच्छाओं और निर्णयों का प्रश्न उठता है। मैत्रेयी पुष्पा की स्त्रियाँ परिस्थितियों को केवल सहन नहीं करतीं; वे उनसे टकराती हैं, प्रश्न करती हैं और अपनी पहचान बनाने का प्रयास करती हैं।

## 5. मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री-अस्मिता

मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य स्त्री-अस्मिता के अध्ययन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। उनके साहित्य में ग्रामीण अंचल, विशेषकर बुंदेलखंड के सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि में स्त्री के संघर्षों को अभिव्यक्ति मिली है।

उनकी स्त्री-पात्रों के सामने अनेक स्तरों की चुनौतियाँ हैं-पितृसत्ता, सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक निर्भरता, जातिगत भेदभाव और पारिवारिक दबाव। इसलिए उनके यहाँ स्त्री-विमर्श केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहता।

उनकी कहानियों 'पगला गई है भगवती' और 'फैसला' को भी स्त्री-अस्मिता के संदर्भ में पढ़ा जा सकता है। इन कहानियों में स्त्री के अनुभव, सामाजिक दबाव और निर्णय की स्थितियाँ सामने आती हैं। दोनों रचनाएँ संकेत करती हैं कि स्त्री की पहचान केवल भावनात्मक संबंधों से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके सामाजिक अनुभव और निर्णय लेने की क्षमता भी उसकी अस्मिता का हिस्सा हैं।

## 6. आत्मकथा में स्त्री-अस्मिता

आत्मकथा स्त्री-अस्मिता की अभिव्यक्ति की अत्यंत महत्त्वपूर्ण विधा है, क्योंकि यहाँ स्त्री अपने जीवन की कथा स्वयं कहती है।

हिंदी में प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' , मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुंडल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' , तथा दलित स्त्री आत्मकथाओं में कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' जैसी रचनाएँ स्त्री-जीवन के विविध अनुभवों को सामने लाती हैं।

इन रचनाओं में स्त्री अपने जीवन को केवल निजी घटना के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसके पीछे मौजूद सामाजिक संरचनाओं को भी पहचानती है। इस प्रकार आत्मकथा में 'मैं' व्यक्तिगत होने के साथ-साथ सामाजिक भी हो जाता है।

## 7. दलित स्त्री साहित्य और अस्मिता

स्त्री-अस्मिता का प्रश्न जाति और वर्ग से अलग करके पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। दलित स्त्री को एक साथ लैंगिक और जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इसलिए दलित स्त्री लेखन में अस्मिता का स्वर अधिक जटिल रूप ग्रहण करता है।

कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। शीर्षक ही इस बात की ओर संकेत करता है कि दलित स्त्री का अनुभव केवल स्त्री होने के अनुभव तक सीमित नहीं है; जातिगत भेदभाव भी उसके जीवन को प्रभावित करता है।

दलित स्त्री लेखन यह प्रश्न उठाता है कि क्या सभी स्त्रियों के अनुभव समान हैं? इसका उत्तर है-नहीं। जाति, वर्ग, शिक्षा और आर्थिक स्थिति के कारण स्त्रियों के अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए स्त्री-अस्मिता को बहुस्तरीय दृष्टि से देखना आवश्यक है।

### 8. नाटक में स्त्री-अस्मिता

नाटक में स्त्री-अस्मिता संवाद और संघर्ष के माध्यम से सामने आती है। मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे' में सावित्री का चरित्र आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की जटिलताओं को सामने लाता है। वह आर्थिक और पारिवारिक असुरक्षा के बीच अपने जीवन को सँभालने का प्रयास करती है।

यहाँ स्त्री का संघर्ष केवल पुरुष से संघर्ष नहीं है, बल्कि टूटते पारिवारिक संबंधों, आर्थिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच अपनी पहचान बनाए रखने का संघर्ष भी है।

### 9. संस्मरण और रेखाचित्र में स्त्री-अस्मिता

संस्मरण और रेखाचित्र विधाओं में स्त्री-जीवन के अनुभवों को निकटता से प्रस्तुत किया गया है। महादेवी वर्मा की 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में विभिन्न व्यक्तियों के जीवन के माध्यम से समाज के संवेदनशील पक्ष सामने आते हैं।

इन रचनाओं में स्त्री के जीवन को देखने के लिए करुणा के साथ-साथ मानवीय गरिमा की दृष्टि भी दिखाई देती है। इससे समझने में सहायता मिलती है कि स्त्री-अस्मिता केवल अधिकारों का प्रश्न नहीं, बल्कि सम्मान और मानवीय गरिमा का भी प्रश्न है।

### 10. साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता के प्रमुख स्वर

- विभिन्न विधाओं के अध्ययन से स्त्री-अस्मिता के निम्न प्रमुख स्वर सामने आते हैं:
- पहला-आत्मपहचान का स्वर: स्त्री अपने अस्तित्व को केवल पत्नी, माँ या बेटी के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में पहचानती है।
- दूसरा-स्वतंत्रता का स्वर: स्त्री अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की इच्छा व्यक्त करती है।

- तीसरा-प्रतिरोध का स्वर: साहित्य की स्त्री रूढ़ियों और असमानताओं के विरुद्ध प्रश्न करती है।
- चौथा-आर्थिक स्वतंत्रता का स्वर: आर्थिक आत्मनिर्भरता को स्त्री के आत्मविश्वास और स्वतंत्र निर्णय से जोड़ा जाता है।
- पाँचवाँ-देह और इच्छा की स्वीकृति: आधुनिक महिला लेखन में स्त्री की इच्छाओं और देह को केवल पुरुष-दृष्टि से देखने के बजाय स्त्री के अपने अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- छठा-जाति और वर्ग की चेतना: दलित और ग्रामीण स्त्री लेखन में स्त्री-अस्मिता जाति, वर्ग और सामाजिक स्थिति से जुड़ जाती है।
- सातवाँ-अभिव्यक्ति का स्वर: स्त्री स्वयं अपने अनुभवों को भाषा देती है। यह 'मौन से वाणी' की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है।

## निष्कर्ष

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि स्त्री-अस्मिता एक बहुआयामी अवधारणा है। कविता में यह आत्मसंवेदना के रूप में, कहानी में व्यक्तिगत और पारिवारिक संघर्ष के रूप में, उपन्यास में व्यापक सामाजिक संघर्ष के रूप में, आत्मकथा में आत्मकथन और आत्मपहचान के रूप में तथा दलित स्त्री साहित्य में जाति और लिंग आधारित अनुभवों के संयुक्त स्वरूप में सामने आती है।

महादेवी वर्मा से लेकर मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा तक स्त्री-पात्रों की यात्रा को देखें तो एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। स्त्री अब केवल साहित्य की 'विषय-वस्तु' नहीं रह गई है, बल्कि वह अपनी दृष्टि, भाषा और अनुभवों के साथ स्वयं साहित्य की रचनाकार और सक्रिय आवाज बनी है।

मैत्रेयी पुष्पा जैसे लेखकों के साहित्य में यह स्वर विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए की स्त्रियों तक पहुँचता है। वहीं दलित स्त्री लेखन यह समझ विकसित करता है कि स्त्री-अस्मिता को जाति, वर्ग और सामाजिक परिस्थितियों से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

अतः साहित्यिक विधाओं में स्त्री-अस्मिता का विकास केवल स्त्री की स्थिति में परिवर्तन का साहित्यिक दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक चेतना का भी प्रमाण है जिसमें स्त्री अपने अस्तित्व, सम्मान, स्वतंत्रता और पहचान को स्वयं परिभाषित करने की दिशा में आगे बढ़ती है।

## संदर्भ सूची

1. वर्मा, महादेवी - श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।

2. भंडारी, मन्नू - आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. भंडारी, मन्नू - मन्नू भंडारी की कहानियाँ, विभिन्न संस्करण।
4. सोबती, कृष्णा - मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सोबती, कृष्णा - ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. पुष्पा, मैत्रेयी - चाक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. पुष्पा, मैत्रेयी - इदन्नमम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. पुष्पा, मैत्रेयी - अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. पुष्पा, मैत्रेयी - कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. बैसंत्री, कौशल्या - दोहरा अभिशाप, परमेश्वरी प्रकाशन।
11. खेतान, प्रभा - अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. राकेश, मोहन - आधे-अधूरे, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
13. मैत्रेयी पुष्पा - पगला गई है भगवती तथा अन्य कहानियाँ।
14. मैत्रेयी पुष्पा - फैसला तथा अन्य कहानियाँ।